International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मटियानी के औपन्यासिक पात्र और हीनता मनोग्रंथि

मृणालिनी पारीक
सहायक आचार्य, हिन्दी
एन.डी.बी.राजकीय पीजी महाविद्यालय, नोहर
e-mail : mrinalinipareek456@gmail.com

शैलेश मटियानी हिन्दी रचना संसार में विशेषतः उपन्यास लेखन में अपना न केवल विशिष्ट स्थान रखते हैं बल्कि अपने स्वतंत्र चिन्तन के कारण एक असाधारण पहचान भी बनाए हुए हैं। विषम से विषमतर और दारूण से दारूणतर परिस्थितियों से आजन्म संघर्ष करते हुए मटियानी ने जिस प्रकार से अपने विशाल साहित्य भंडार से, अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य संसार को महिमा मंडित किया है वह निश्चित ही आश्चर्य में डालने वाला है।

मटियानी ने अपने औपन्यासिक चरित्र–चित्रण में फ्रायड कथित अहं तथा दमित काम वासना के समान एडलर के प्रमुख सिद्धान्त हीनता ग्रंथि का भी प्रचूर प्रयोग किया है। मटियानी के उपन्यासों के कई पात्र इस मनोग्रंथि से पीड़ित हैं।

एडलर ने व्यक्ति की प्रवृत्तियों को हीन भाव या श्रेष्ठ भाव से अनुप्रेरित माना है। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में कोई ना कोई कमी पाई जाती है। हीन भावना व्यक्ति की प्रवृत्तियों को प्रभावित करती है और व्यक्ति उससे बचने की चेष्टा करता है। अपने को श्रेष्ठ बनाने की प्रवृत्ति सभी में पाई जाती है। लेकिन पूर्णतः श्रेष्ठ कोई नहीं हो सकता और इसी प्रयत्न में व्यक्ति में हीन भावना ग्रंथि का रूप ले लेती है जो मानसिक रोग का कारण भी बन जाता है। हीनता की भावना की क्षति–पूर्ति के लिए व्यक्ति श्रेष्ठ बनने का प्रयास करता है परन्तु पूर्ण श्रेष्ठता भी असंभव है और इसी पूर्ण श्रेष्ठता को न प्राप्त कर पाने के कारण व्यक्ति हीनता ग्रंथि से ग्रस्त हो जाता है। एडलर के मत में जब व्यक्ति हीनता और श्रेष्ठता की भावनाओं में समन्वय नहीं कर सकता तब मानसिक रोग का शिकार हो जाता है। इसलिए एडलर ने मानसिक रोग की चिकित्सा में इनको प्रमुख स्थान दिया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एडलर के मतानुसार विश्व का हर एक मानव हीनता ग्रंथि से पीड़ित है। इसी आत्महीनता के कारण वह अपने आपको श्रेष्ठ एवं बलशाली सिद्ध करने में संलग्न रहता है। एडलर मानसिक विकृतियों के मूल में स्थित हीनता ग्रंथि को पहचानते हैं। व्यक्ति श्रेष्ठता ग्रंथि के सहारे हीन भावना को दूर करने में मग्न रहता है और जब हीन भावना को दूर नहीं कर पाता है तो वह हीनता की ग्रंथि से ग्रस्त हो जाता है।

एडलर हीन भावना को मनुष्य की विशेषकर बच्चों की मूल प्रेरक शक्ति मानते हैं। इसी हीन भावना की क्षति–पूर्ति के लिए ही मनुष्य सतत् प्रयत्नशील रहता है। इसलिए यही हीन भावना मनुष्य की मूल प्रेरक शक्ति है। एडलर के अनुसार, प्रौढ व्यक्तियों में विकसित हीनता की भावना जिसका कारण यह होता है कि वे अपने बचपन की अवधि में हीनता की भावना पर नियंत्रण नहीं पा सके हैं जब वे छोटे थे और दुनिया के बारे में उनका ज्ञान सीमित था।

संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में 'हीन' के अर्थ को विवेचित करते हुए कहा गया है– ''परित्यक्त, छोड़ा हुआ, वंचित, घटिया, तुच्छ, नाचीज, सुख–समृद्धि रहित।''[1] इस प्रकार हीन का अर्थ परित्यक्त, सुख–समृद्धि से हीन तथा निम्न कोटि से संबंध रखने वाले से होता है। व्यक्ति की इच्छाएँ जब पूर्ण नहीं होती तथा इच्छापूर्ति के मार्ग में बाधा पड़ जाती है, उस समय व्यक्ति को जो पीड़ा अनुभव होती है, वह अबोध चेतना में चली जाती है। हीन भावना इन्हीं अनुभवों का फल है। इस भावना से पीड़ित व्यक्ति प्रायः इसको दबाने के कारण हीन ग्रंथि से ग्रसित हो जाता है। इस मनोग्रंथि के मूल में कुरूपता, निर्बलता, निर्धनता, अनैतिकता आदि होते हैं।

विख्यात मनोवैज्ञानिक एडलर ने असामान्य व्यवहार के स्पष्टीकरण में हीनता ग्रंथि को बहुत महत्व दिया है। एडलर के अनुसार–''मनः स्नायु विकृति के रोगी में एक प्रकार की हीनता की भावना रहती है तथा मनः स्नायु विकृति ही प्रत्येक हीनता को दूर करने का साधन है।''[2]

इस प्रकार अपनी हीनता की भावना को दबाने या छिपाने के बहाने व्यक्ति इस विकृति से पीड़ित हो जाता है। वह अनुपयुक्त जीवन शैली को अपनाता है। अवसादित स्नायुविकृति का शिकार हो उदास, हताश, निराश जीवन व्यतीत करता है। मनोविज्ञान के पारिभाषिक शब्दकोश के अनुसार ''आत्महीनता की दमित और विस्मृत भावना/ प्रतिकूल परिवेश, शारीरिक विकृति, बार–बार की असफलता और निराशा से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हीन भावना जब अत्यन्त तीव्रतर और दुःखद हो जाती है तो व्यक्ति उससे मुक्त होने के लिए उसे बरबस दबाता है और उसकी विलोम भावना, अर्थात महद्भाव (Superiority Feeling) को अनजाने में अपनाता है। अहंकार और आत्म प्रदर्शन (Pride and self display) हीन भावना को छुपाने के अचेतन प्रयास है।''[3]

हिन्दी साहित्य में विविध साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से व्यक्ति में व्याप्त हीनता की भावना को चित्रित किया है। भारतीय समाज सामान्यतः उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग में विभाजित है। जहाँ उच्च वर्ग से संबंधित व्यक्ति अनेक सुख–सुविधाओं को भोगता है वहीं निम्न वर्ग से संबंधित व्यक्ति इन सुख–सुविधाओं से वंचित रहता है। सुख–सुविधाओं से वंचित रहने के कारण भी निम्न वर्ग से संबंधित व्यक्ति में हीन भावना की प्रवृति उत्पन्न हो जाती है। व्यक्ति अपने भीतर अनेक शारीरिक, मानसिक, आर्थिक कमियों को देखकर भी हीन ग्रंथि के शिकार होते हैं।

शैलेश मटियानी के उपन्यासों के कई पात्र प्रायः हीन ग्रंथियों से ग्रसित हैं। इनके उपन्यासों के कई पात्रों में आत्म हीनता या हीनता ग्रंथि का प्रभाव विशेष रूप से परिलक्षित होता है।

'हौलदार' उपन्यास में डूँगरसिंह प्रारम्भ में ही सेना में अपनी टांग गंवाकर पंगुत्व को प्राप्त होकर हीनता की ग्रंथि से ग्रसित रूप में प्रकट होता है। ''डूँगरसिंह डून हौलदार के रूप में सारे धौलेछीना गाँव में वाणी के वचन और हाथ के हथियार की तरह चर्चा का विषय बन गया था।''[4]

'हौलदार' उपन्यास में उपन्यासकार रचना के नायक के माध्यम से यह बतलाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि कभी–कभार मनुष्य की अतृप्त वासनाएँ तथा आम महत्वकाक्षाएँ अपनी शारीरिक अक्षमता के कारण मनुष्य में हीन ग्रंथि का रूप ले लेती हैं। इस हीन ग्रंथि से पीड़ित व्यक्ति स्वार्थी, अविश्वासी और ईर्ष्यालू तक हो जाता है। डूँगरसिंह अविवाहित है, उसकी अतृप्त वासना भी कुंठा बनकर हीनता ग्रंथि में बदल जाती है। अपनी भौजियों के व्यंग्य और आतंक से भी वह जीवन पर्यन्त पीड़ित रहता है। तीसरी तरफ नरुली नामक लड़की से प्रेम करता था परन्तु उसमें भी उसे असफलता ही हाथ लगी। इन सभी कारणों से वह हीनता ग्रंथि से पीड़ित होता चला गया। लेखक ने हीनता की ग्रंथि से पीड़ित डूँगरसिंह का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने का प्रयास इस उपन्यास में किया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हीनता ग्रंथि से पीड़ित डूँगरसिंह इतना स्वार्थी और ईर्ष्यालू हो जाता है कि जिस नरुली से वह प्रेम करता है, उसका अहित करने से भी नहीं हिचकिचाता। डूँगरसिंह नरुली और उसके पति हौलदार चतुरसिंह के प्रति अहित की भावना रखता है और गोल्ल देवता के मन्दिर में यही प्रार्थना करता है कि नरुली और चतुरसिंह के कभी संतान ना हो। ''मन्दिर द्वारे पहुँचकर डूँगरसिंह ने दो पैसे भेंट चढाए। फूल–पाती उठाकर, टोपी के किनारे, सिर पर रखी जो गांधी महाराज की लाम की निशानी के रूप में रह गई थी। बैसाखी पर भार दिये–दोनों हाथ जोड़े–दाहिने होना हो, गोल्ल राजा! जिसने नरुली का प्यार छीनने के लिए, लकड़ी का आधार दिया–ऐसी लाम के लेफ्टीनंटो और हौलदारों में से बीज को न रखना! हे परमेश्वर, मेरी वाणी सुफल कर देना।''[5] पर्वतीय परिवेश में लिखित 'हौलदार' उपन्यास वास्तव में हीन भावना जनित मनःस्थितियों का विभिन्न कोणों से खींचा गया मनोवैज्ञानिक चित्र है।

'दो बूँद जल' उपन्यास का पात्र फतेबहादुर अपने शारीरिक आकार–प्रकार को लेकर हीन भावना से ग्रसित है। ''फतेबहादुर का अपना कद औसत नेपालियों की तरह नाटा है। चारपाई पर बैठी हुई, सोई हुई या झुग्गी की कम ऊँचाई के कारण झुक–झुककर चलती हुई रेशमा उसके नाटे कद से ऊपर नहीं उठ पाती थी। सामने से उर्ध्वफणि सर्पिणी–सी आती हुई रेशमा फतेबहादुर को अपने से हाथ भर से ज्यादा ऊँची उठी हुई दिखाई दे रही है। ...फतेबहादुर महसूस करता है कि थोड़ी ही देर में वह आगे–आगे चल रहा होगा और रेशमा उसके पीछे–पीछे आ रही होगी। उसके नाटे कद से एक फुट ऊपर उठी हुई औरत को कोई भी तो उसकी घरवाली नहीं समझ सकेगा। . ..फतेबहादुर को रेशमा की लम्बी कद–काठी एक अजीब से संकोच में डुबा देती है।''[6]

फतेबहादुर के मालिक मिस्टर कपूर के दोनों छोटे बच्चे भी फतेबहादुर की इस कमजोरी को जानते हैं कि फतेबहादुर अपने नाटे कद के कारण अक्सर संकोच का अनुभव करता है। ''सिर्फ सत्रह वर्षों की उम्र में ही सरोसती ठकुरानी से भी ज्यादा लम्बी हो आई मिस सोफिया कपूर भी फतेबहादुर की इस कमजोरी को जानती है। मिस सोफिया कपूर अक्सर अपनी स्कर्ट को फुलाते हुए ऐसे सर्राटे से फतेबहादुर के पास से गुजरती है कि फतेबहादुर 'सलाम' करना भूल जाता है, सिर्फ एड़ियों के बल उचक कर खड़ा हो जाता है।''[7] अतः फतेबहादुर अपनी शारीरिक दुर्बलता को लेकर हीन भावना से ग्रस्त है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'दो बूँद जल' उपन्यास की प्रमुख पात्र रेशमा भी अपने मजबूरी में अपनाए गये व्यवसाय के कारण अनेक स्थलों पर हीन भावना से ग्रस्त हो जाती है। अपने बेटे सुरेन्दर को मनीआर्डर भेजने के लिए जब वह डाकखाने पहुँचती है– ''रेशमा महसूस करती है कि उससे बोलते वक्त मर्द लोगों की सिर्फ आँखें ही नहीं, भाषा भी बदलने लग जाती है। ...मास्टर साहब की बगल वाले बाबू बोले, अरे यार शर्मा, तुम क्यों 'सरप्राइज्ड' हो रहे हो, दोस्त? अपनी–अपनी कमाई की बात है। एक–दो रुपयों का 'डिफरेंस' तो उनके लिए कीमत रखता है, जिन्हें पहली तारीख को गिनती के सौ–सवा सौ मिलते हैं। ...रेशमा महसूस करती रही कि दोनों बाबू बड़े गौर से उसके चेहरे को देख रहे हैं। दोनों ही थोड़ी देर तक हंसते रहे।''[8]

इसी तरह रेशमा जब अपने लिए दवा लेने अस्पताल पहुँचती है तो इसी हीनता की भावना से ग्रसित होने के कारण वह अस्पताल में अपने को दिखलाने और दवा लेने में भी समर्थ नहीं हो पाती। ''अस्पताल के अहाते के अन्दर पहुँच जाने पर रेशमा ने बाहर के बड़े कमरे में बैठे हुए स्त्री–पुरुषों को आर–पार तक देखा। सोचा, किसी से पूछे कि कहाँ अपने को दिखलाना पड़ेगा और कहाँ से दवा लेनी होगी। औरतों में से कई एक से आँख मिलाने के बाद भी रेशमा किसी से पूछने के लिए आगे नहीं बढ़ पाई। ...औरतों से पूछते हुए सिर्फ शर्म ही नहीं महसूस होती है बल्कि औरतों की आँखों में उभरी हुई वितृष्णा भी बड़ी क्लेशदायक लगती है। ...औरतें सिर्फ मुस्कुराने भी लगती हैं तो कहीं अन्दर ही अन्दर सुईयां–सी चुभती चली जाती हैं। उसकी धंसी हुई आँखें, उभरी हुई हड्डियां और चिट्टे–गोरे रंग के बावजूद जगह–जगह पड़े हुए स्याह धब्बों को घर–गृहस्थी वाली औरतें जैसे एक क्षण में टोह लेती हैं और उनकी आँखों से वितृष्णा झांकने लगती हैं।''[9] भद्र समाज की हर एक औरत द्वारा उसे वेश्या रूप में ही देखा जाना बड़ा यंत्रणादायी लगता है। वह अत्यधिक हीनता का अनुभव करती है।

''रेशमा अब भी महसूस कर रही है कि जिस औरत से भी आँखें मिलती है, जल्दी ही हटा लेने की इच्छा हो जाती है। ...रेशमा महसूस करती है कि नब्ज देखने वाले वैद्यजी भी शायद सिर्फ उसकी बाहरी नसों को टटोलेंगे और पूछने लगेंगे कि कोई गुप्त बिमारी तो नहीं है ? ...जर्द और बीमार चेहरे वाली औरतों की भीड़ में से सिर्फ एक रेशमा से ही पूछा जाएगा। रेशमा कहीं भी आँखें नहीं उठा पाती है और बेंच के दूसरे कोने पर जा बैठती है। ...लोग वापस जाने लगे तो रेशमा भी कांपते हुए पाँवों से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अस्पताल के अहाते से बाहर निकल आई। किसी से भी पूछने और दवा लेने का साहस वह नहीं जुटा पाई थी।''[10] स्पष्ट है कि रेशमा अपने अनैतिक पेशे के कारण हीन भावना से ग्रसित है। भद्र समाज के हरेक पुरुष और हरेक औरत द्वारा वेश्या के रूप में ही देखा जाना रेशमा को हीनभावना से भर देता है।

'एक मूँठ सरसों' उपन्यास की देवकी अवैध संतान होने के कारण हीन भावना से ग्रसित है। रेवती अपनी अवैध संतान देवकी को जन्म देकर सामाजिक अपमान की कुण्ठा को सहने में असमर्थ होकर आत्महत्या कर लेती है। अनाथ बालिका देवकी पिरथुली आमा द्वारा पाली पोसी गई। अनाथ होने पर उसके मस्तिष्क में धीरे–धीरे हीनत्व ग्रंथि बनती जाती है, जब वह स्पष्ट रूप से अपने पिता का नाम नहीं बता सकती और अब वह यह भी समझ गई है कि अवैध संतान जन्माने पर उसकी माँ ने आत्महत्या कर ली थी। "देवकी ने यह भी जान लिया था कि उसकी माँ थी, मगर वह आत्मघात कर चुकी। उसके भी पिता हैं मगर उन्हें वह 'बौज्यू' कह कर नहीं पुकार सकती।''[11]

'कोई अजनबी नहीं' उपन्यास की रामप्यारी अपने कद्दावर शरीर के कारण अनेक बार हीन भावना से ग्रसित हो जाती है। उसे लगता है कि सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए वह बस एक कद्दावर शरीर वाली औरत है। ''रामप्यारी ने महसूस किया कि सिर्फ इसी जगह के लिए नहीं, बल्कि शायद समूची पृथ्वी के लिए वह सिर्फ एक कद्दावर सांवली औरत मात्र है– एक ऐसी कद्दावर औरत, जिसे कोई पुरुष गोद में या कंधे पर नहीं बैठा सकता।''[12] उसे यह लगता है कि वह कहीं भी जाए, अपने कद्दावर शरीर के कारण औरों के लिए मनोरंजन का साधन बन जाने की अनिवार्यता से वह अपने को मुक्त नहीं कर सकती। रामप्यारी अपने कद्दावर जिस्म को किसी तालाब में डूबता हुआ सा महसूस करती है, मगर बार–बार कितनी ही आशंकाएँ आँखों में मंडराने लगती हैं।

इसी उपन्यास की बिंदो चौधरानी जब खाना खाते वक्त उससे पूछ बैठती है कि क्या इत्ते से ही भर लिया तेरा पेट ? तब भले ही बिंदो चौधरानी ने यह बात सामान्य ढंग से कही होगी पर रामप्यारी को लगता है कि बिंदो ने उसके कद्दावर शरीर पर आक्षेप किया है। ''परोक्ष रूप से बिंदो ने उसके कद्दावर शरीर पर ही आक्षेप किया है कि जितना स्थूल उसका जिस्म है, उतनी ज्यादा उसकी खुराक भी तो होगी ही।''[13] स्पष्ट है कि रेशमा अपनी शारीरिक कद– काठी को लेकर हीन भावना से ग्रसित है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'कबूतरखाना' उपन्यास में गणपत रामा की बहन गंगा अपने भाई गणपत के सामने वेश्या जीवन भोगने की विवशता से नजर ना मिला पाने के कारण, हीनत्व ग्रंथि का शिकार होकर आत्महत्या कर लेती है। गंगा अपने भाई गणपत को हैजे की बीमारी से बचाने के लिए वेश्या का पेशा अपनाकर पैसे कमाती है और दवाई लेने लिए हर महीने पन्द्रह रूपये मनीआर्डर द्वारा गणपत को भेजती है। उसे अपने मजबूरी में अपनाए गये पेशे के कारण हीनता का अनुभव होता है और इस कारण से जब गणपत को उसके पेशे के बारे में पता चलता है तो अपने भाई से नजरें ना मिला पाने के कारण वह आत्महत्या कर लेती है। गणपत बेगम–विला की पहली सीढ़ी चढ़ा ही था, कि कृष्णा बाई की चीख सुनाई पड़ी –''हाय रे, देवा! काय करूँ मी आता ? ....ओ, भैया जी ...ओ रे दागडू ! ...ओ, रे सखाराम! ...ओ धिथरी बाई... ।''[14] गणपत ठिठक सा गया।

कृष्णाबाई की चीख–चिल्लाहट सुनकर आस–पड़ौस के भडुए, होटलों के वेटर सभी ऊपर को दौड़ पड़े। पीछे–पीछे गणपत भी दूसरी मंजिल पर जा पहुँचा–सामने गंगा की लाश पड़ी थी। ''अपने ही हाथों से फांस मारकर, उसने अपने जीवन का अन्त कर लिया था। शायद इसलिए कि, एक वेश्या के रूप में भाई से नजरें मिलाने की ग्लानि से, मृत्यु को ही श्रेयस्कर समझा हो उसने?''[15]

अतः शैलेश मटियानी के उपन्यासों में व्यक्ति में व्याप्त हीनता की भावना के विविध रूपों को चित्रित किया गया है। व्यक्ति आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक आदि कारणों से हीन ग्रंथि एवं कुंठाओं का शिकार होता है। व्यक्ति अगर अपनी कमजोरी को समझ कर उस पर काबू करना जानता हो तो हीन भावना से ग्रस्त होते हुए भी उससे मुक्ति पा सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ

1. रामचन्द्र वर्मा (सम्पादन), संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर, पृ. 1072
2. वही
3. निर्मला शेरजंग, मनोविज्ञान का पारिभाषिक शब्दकोष, प्र.सं.1970, पृ. 83
4. शैलेश मटियानी, हौलदार, पृ. 77
5. शैलेश मटियानी, हौलदार, पृ. 10
6. शैलेश मटियानी, दो बूँद जल, पृ. 122,123
7. शैलेश मटियानी, दो बूँद जल, पृ. 124
8. शैलेश मटियानी, दो बूँद जल, पृ. 135
9. शैलेश मटियानी, दो बूँद जल, पृ. 139
10. शैलेश मटियानी, दो बूँद जल, पृ. 140
11. शैलेश मटियानी, एक मूँठ सरसों, पृ. 77,78
12. शैलेश मटियानी, कोई अजनबी नहीं, पृ. 14
13. शैलेश मटियानी, कोई अजनबी नहीं, पृ. 83
14. शैलेश मटियानी, कबूतरखाना, पृ. 22
15. शैलेश मटियानी, कबूतरखाना, पृ. 37